गोपी गीत

व्रज की भूमि में जन्म जो लिया, इन्दिरा भी संग आ यहीं बसी।
कृष्ण हम तो हैं बस तुम्हारी ही, ढूंढती तुम्हें कुज कुंज में ।।1।।
बिना मोल की किंकरी तेरी, कुमुदिनी से कांत नैन हैं तेरे।
बींध कर हमें मार कर हमें, बोलो प्रिये क्यूं चले गए ।।2।।
मारना हमें चाहते अनेक, असुर ही नहीं सुरों के राज भी।
आंधी पानी से कालि नाग से, बचा के हमें अब क्यूं मारते ।।3।।
गोपिकानन्दन ही तुम नहीं, अखिल देह के अन्तरात्म हो ।
सृष्टिकर्ता की प्रार्थना पे तुम, विश्व के लिए अवतरित हुए ।।4।।
शरण में तेरी आए हुए, प्रेम से तुम्हें जो पुकारते।
करते तुम उन्हें अभय सर्वदा, सर पे कर कमल रख के ओ प्रिये ।।5।।
व्रज जनों के दुख हरने वाले वीर, मधुर स्मित तेरा करदे मान भंग।
चरण की तेरी दासी हैं हम, चारु दर्श की प्यासी हैं हम ।।6।।
श्री चरण तेरे पाप को हरें, वन में गाय के पीछे चलें।
पाद स्पर्श से नाग भी तरे, गोपी के हृदय उनके बिन जलें ।।7।।
ज्ञानी मुनी मोहित हुए, मधुर बैन से वल्गु वाक्य से।
मधुर से मधुर अधर रस तेरा, दान दो प्रिये हमको प्रेम से ।।8।।
तेरी कथा जीवनदायिनी, रस भरी भरी श्री प्रदायिनी।
भक्त जन करें गान सर्वदा, श्रवण जो करे पाप से तरे ।।9।।
हंस के प्रेम से देखना तेरा, बतकही मधुर स्पर्श प्यार का।
याद जब करें ताप से जलें, लीला तेरी मोद से भरी ।।10।।
व्रज से दूर तुम जाते प्रिये, ग्वाल बाल संग गाय को लिए।
वन के मार्ग हैं कंटकों भरे, उनकी याद हमको घायल करे ।।11।।
शाम जो ढले लौटते हो तुम, देख के तुम्हें आह हम भरें।
धूल से भरी अलक से सजा, चन्द्र मुख तेरा मोहित करे ।।12।।
प्रणत जन के काम पूरण करे, पद्मजा भी जिनकी अर्चना करे।
ध्यान हम उन्हीं चरण का करें, जो चरण हृदय ताप को हरें ।।13।।
बांसुरी तेरे होंठ चूमती, मधुर तान से सबको मोहती।
जग के राग से मुक्त जो करे, छेड दो वही गीत ओ प्रिये ।।14।।
युग समान पल बीतते प्रिये, मुख कमल तेरा दूर जो रहे।
दरस जब तेरा गोपी को मिले, पलक नैन के भार सम लगें।।15।।
पति पुत्र को भाई बन्धु को, त्याग कर तेरे मोह में बंधे।
कपट से भरे कर्म हैं तेरे, छोड कर हमें तुम जो यूं चले ।।16।।
नेह नैन का, रस भरे वचन, लौ मिलन की जान हम गई।
रमा रहे जहां वक्ष है वही, देख देख कर मुग्ध हो रही।।17।।
विश्व मंगली लीला तेरी, ताप नाश कर दुख को हरे।
निज जनों को दो ओषधि वही, हृदय रोग का शमन जो करे।।18।।
कठोर वक्ष पर सुकोमल चरण, धारते हुए भय हमें लगे।
चरण में उन्हीं कांटे चुभें, वेदना से हम अचेत हो रही।।19।।
दिल पुकारता आओ प्रिये, आओ प्रिये आओ प्रिये।
कृष्ण हम तेरे कृष्ण हम तेरे, कृष्ण हम तेरे कृष्ण हम तेरे ।।